माँ...!

पता नही तुम कभी थी भी या नही..!

जबसे समझना शुरू किया,

सबने समझा दिया कि, तू ही मेरी माँ है..!

तुम्हारे हर स्पर्श ने जीया है, मुझे.,

तू भी तो जी लेती थी, मेरी हर मुस्कान पर..!

कैसे समझू कि, स्पर्श और मुस्कान के,

रिश्ते को ही माँ कहते है.!

इतनी समझ तो आज भी नही मुझे..,

तभी तो माँ को ही खोज किये चलता हूँ।

हर नुक्कड़ पर माँ मिली,

माँ की ममता मिली,

माँ का स्पर्श और मुस्कान भी मिली..,

पर अहसास हुआ, वो माँ सी थी।

तू तो नही मिली न.?

तुम्हारे वज़ूद को कैसे समझू.,

हर निशानी पर कालिख पूता पाया है।

ग़र तू होती अगर,

निशानियाँ भी रंगरेज़ सी रंगी होती.,

जीवन के कुसुम-बेल की तरह।

तुम्हारे हाथों की घिसी हुई लकीरो ने,

बिन कहे बता दिया था..,

जड़ो में कितनी शिद्दत से पानी डाला था, तुमने।

जड़े मजबूत, तो ईमारत भी मजबूत..,

सूना था, देख नही पा रहा हूँ।

तुम होती, तो ऐसा होता,

तुम होती तो वैसा होता..!

ये पुरानी बात, फिल्मो की बात.!

आज तो,

तुम होती तो ऐसा नही होता,

तुम होती तो वैसा नही होता।

तुम्हारा ही रक्त है, मुझमे,

रुलाऊँगा नही तुम्हे,

आकर हँसाऊंगा..!!